



## भारतीय भाषाएँ और हिन्दी

G. Kodanda Ramulu

एम ए, स्लेट, हिन्दी प्राध्यापक, सरकारी महाविद्यालय, रायदुर्ग, आन्ध्रप्रदेश

भारत देश में अनेक भाषाएँ हैं इनमें हिन्दी एक महत्वपूर्ण भाषा है। यहां विभिन्नता में एकता है। इसका कारण केवल भौगोलिक ही नहीं, बल्कि भाषाई तथा संस्कृतिक भाषाएं हैं। भारत में 1652 मातृभाषाएँ हैं, लेकिन संविधान के द्वारा 22 भाषाओं को राजभाषा की मान्यता दी गयी है। संविधान अनुच्छेद 344 के अंतर्गत पहले केवल 15 भाषाओं को राजभाषा की मान्यता दी गयी थी। लेकिन 21 वें संविधान संशोधन के द्वारा सिन्धी और 71 वें संविधान संशोधन के द्वारा नेपाली, कोंकणी तथा मणिपुरी को भी राष्ट्रभाषा का दर्जा प्रदान किया गया है। भारत में इन 22 भाषाओं को बोलने वाले लोगों की संख्या लगभग 90 प्रतिशत है। संविधान की 8 वी अनुसूची में उन भाषाओं का उल्लेख किया गया है। जिन्हें राजभाषा की ज्ञान दी गयी है।

भारत एक विशाल देश है। यहाँ कई भाषाएँ बोली जाती है। जो भाषा किसी राष्ट्र के भिन्न-भिन्न भाषा-भाषियों के पारंपरिक विचार के सूत्र में बांधती है और समूचे राष्ट्र को भावात्मक एकता के सूत्र में बांधती है। किसी भी राष्ट्र में प्रचलित सभी भाषाएँ होती हैं। जब कई मानक भाषा उन्त होकर पूरे राष्ट्र की सामाजिक और संस्कृतिक विरसता का प्रतिनिधित्व करने लगती है।

भारत बहुभाषी देश है। बहुभाषी देशों में राष्ट्रभाषा का स्वरूप उतना स्पष्ट नहीं होता। महात्मागांधी ने स्वतंत्रता आन्दोलन के दिनों में उसे राष्ट्रभाषा के रूप में अपनाया। नेताजी-सुभाष चंद्रबोस ने उसे ही 'आजाद हिन्दी फौज' की भाषा बनाया। हिन्दी स्वतंत्र भारत की राष्ट्रभाषा मानी जाने लगी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जब वर्ष 1963 में राजभाषा अधिनियम के माध्यम से अंग्रेजी को पूरी तरह से हटाने का प्रावधान किया गया, तब तमिलनाडु में जबर्दस्त हिन्दी विरोधी आन्दोलन चलाया, तब तत्कालीन प्रधानमंत्री 'श्री लाल बहादूर शास्त्रीजी द्वारा उक्त अधिनियम में संशोधन करके अंग्रेजी को भी भारत की राजभाषा बनाए रखने का आश्वासन देने पर ही आंदोलन शांत हो गया।

भारतीय भाषा को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है।

- 1 प्राचीन
- 2 मध्यकालीन आर्य भाषा
- 3 आधुनिक भारतीय भाषा

प्राचीन आर्य भाषा के अंतर्गत निम्न लिखित भाषाएँ आती है।

- 1 वैदिक संस्कृत: वैदिक संस्कृत 2000 ई.स.पूर्व था उसके पहले से लेकर 600 ईसा पूर्व तक बोली जानेवाली एक हिन्दी आर्य भाषा

थी। यह संस्कृत की पूर्वज भाषा थी। आदिम हिन्दी ईरानी भाषा की बहुत ही निकट की संतान थी। उस समय फारसी और अवेस्ताई भाषा प्राचीनतम ज्ञात ईरानी भाषा एक दूसरे के बहुत करीब है। वैदिक संस्कृत हिन्दू-यूरोपीय भाषा परिवार की हिन्दी ईरानी भाषा शाखा की सब से प्राचीन प्रामाणिक भाषा है।

हिन्दुओं के प्राचीन वेद, धर्मग्रंथ, वैदिक संस्कृत में लिखे गए हैं। ऋग्वेद की वैदिक संस्कृत जिसे ऋग्वेदिक संस्कृत कहा जाता है। सबसे प्राचीन रूप हैं। 'पाणिनी के व्याकरण नियमीकरण के बाद की शास्त्रीय संस्कृत और वैदिक संस्कृत में काफी अंतर है।

2 लौखिक संस्कृत: लौखिक संस्कृत साहित्य का वैदिक साहित्य से अनेक प्रकार का भेद पाया जाता है। वैदिक साहित्य शुद्धतः धार्मिक है तथा इससे सभी लौखिक तत्वों का बीज समाहित है, लौखिक संस्कृत साहित्य प्रधान रूप से धार्मिक-धर्म निरपेक्षा है, अथवा धर्म में इसे लोक-परलोक से ही संबंधित कहा जा साता है। इस साहित्य में महाकाव्य रामायण एवं आर्य काव्य जिनमें गध्यकाव्य भी सम्मिलित है। नाटक, अलंकार शास्त्र, दर्शन सूत्र विधि, काल और वस्तु शास्त्र, गणित, उपयोग आर्य विभिन्न विधाओं की शाखाएँ भी प्राप्त होती है।

लौखिक साहित्य की भाषा तथा वैदिक साहित्य की भाषा में भी अंतर पाया जाता है। दोनों के बाद रूप तथा धातुरूप अनेक प्रकार से भिन्न है। वैदिक संस्कृत के रूप केवल भिन्न ही नहीं है, अपितु अनेक भी है। विशिष्टता के रूप के जो क्रिया रूपों तथा धातुओं के स्वरूप से संबंधित है। इस संबंध में दोनों साहित्यों की कुछ महत्वपूर्ण भिन्नताएँ निम्न लिखित हैं।

1 शब्द रूप की दृष्टि से: लौखिक संस्कृत में केवल ऐसे रूप बनते हैं जो देव: जना प्रथमा विभक्ति बहुवचन। जब कि वैदिक संस्कृत में इनके रूप देवास, जनाम भी बनाते हैं। इसी प्रकार प्रथम तथा द्वितीय विभक्ति बहुवचन में वैज्ञानिक हैं।

2 वैदिक या लौखिक: इसमें क्रिया रूपों और धातु रूपों में भी विशेष अंतर है। वैदिक संस्कृत इस विषय में कुछ अधिक संवृद्धि है तथा उसमें कुछ और रूपों को उपलब्धि होती है। जब कि लिखिक संस्कृत में क्रिया पदों की अवस्था बताने वाले ऐसे केवल दो ही लकार हैं। लॉट और विधि लिंग जो की लाट-प्रकृति अर्थात् वर्तमान काल की धातु से बनाते हैं।

गूगल के अनुसार अब इंटरनेट पर भी हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग होने लगा। पिछले कुछ दशकों में हिन्दी के वेब पोर्टल अस्तित्व में आइन तभी से इंटरनेट पर हिन्दी ने अपनी छाप छोड़नी प्रारंभ कर दी है। जो अब रपतार पकड़ चुकी है। हिन्दी उन सात भारतीय भाषाओं में एक है। जिसका उपयोग वेब यू आर एल बनाने के लिए किया जा सकता है।

भारत में अनेक उन्नत और समरुद्ध भाषाएँ हैं। किन्तु हिन्दी सब से अधिक व्यापक क्षेत्र में और सबसे अधिक लोगों द्वारा समझी जाने वाली भाषा है। यह सती है की हिन्दी में अंग्रेजी स्टार की विज्ञान और प्रौद्योगिक पर आधारित पुस्तकें नहीं हैं।

हिन्दी भाषा की सब बड़ी विशेषता तो यह है कि, जैसे बोला जाता है वैसा ही लिखा जाता है। हिन्दी भाषा पूर्ण रूप से ध्वनि और उच्चारण आधारित भाषा है। अंग्रेजी सहित विश्व की अन्य भाषाओं के लिखने और बोले जाने में काफी अंतर हो जाता है।

हिंदुस्तान की भाषा के नाम ह—हिन्दी  
आत्माभिव्यक्ति का साधन है — हिन्दी  
भवनाएं व्यक्त करने का माध्यम है—हिन्दी  
भगवान तक पहुंचाने का मार्ग है—हिन्दी

#### हिन्दी भाषा का विकास:

आधुनिक हिन्दी का विकास मूलतः वैदिक संस्कृत ही लौखिक संस्कृत, पालि, प्रकृत और अपभ्रंश भाषाओं के विभिन्न रूपों में पल्लवित हुई, जो खड़ीबोली के रूप में विकसित है। जिसका उद्भव शौरसेनी अपभ्रंश से माना जाता है। जो तीन भागों में विभाजित है।

1 यह 1000 ई से 1500 ई तक है। जिसमें राहुल सांकृत्यायन के अनुसार आदिकाल में नाथपंथी और वज्रायनी सिद्धों ने हिन्दी के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसमें प्रपट साहित्य, शिलालेख ताम्रपत्र तथा प्राचीन पत्रों पर लिपिबद्ध किया गया था। परंतु विदेशी शासनों के कारण इसकी संख्या कम हो चुकी। फिर अपभ्रंश के ही एक रूप में सिद्धों, जैनियों और नाथपंथी साधुओं द्वारा निर्मित साहित्य साधुक्कडी भाषा में मिला।

2 मध्यकाल: यह काल 1500 ई से 1800 ई तक रहा। जिसमें हिन्दी को अंग्रेजी शासन के कारण संघर्ष करना पड़ा। स्वामी दयानंद, राजा लक्ष्मण प्रसाद, भारतेन्दु हरिश्चंद्र, आचारी महावीर प्रसाद द्विवेदी, डॉ हजारी प्रसाद द्विवेदी आदी साहित्यकारों ने इसे आधुनिक हिन्दी का स्वरूप प्रदान किया है।

#### उपसंहार

व्यावहारिक रूप से हिन्दी लगभग पूरे भारत में समझी और बोली जाती है। हिन्दी आज भारत की राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित हुई। हमारे देश की यह एक वरदान है।

#### संदर्भ सूची

- 1 भाषा विज्ञान की भूमिका — आचारी देवेद्रनाथ शर्मा
- 2 हिन्दी व्याकरण और रचना — अवनीर्शील